ISSN: 2278 – 2168

Milestone Education Review

(The Journal of Ideas on Educational & Social Transformation)

Year 08, No.02 (October, 2017)

Milestone Education Society

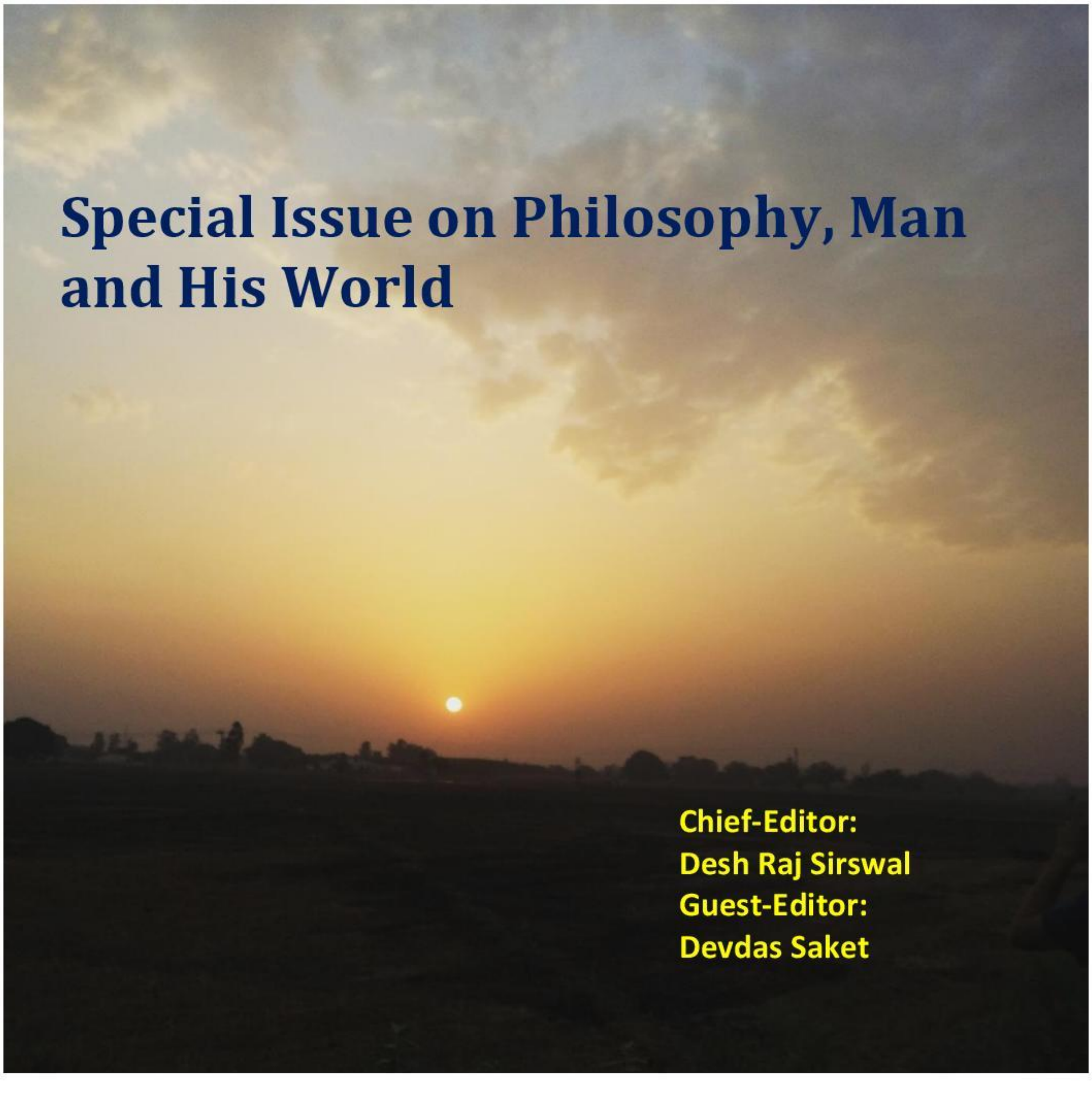

Special Issue on Philosophy, Man and His World

Chief-Editor:
Desh Raj Sirswal
Guest-Editor:
Devdas Saket

In this issue……….

Title & Author	Page No.
दर्शन, सृजनात्मकता और मानवीय सम्बन्ध देशराज सिरसवाल	04-13
भारतीय दर्शन में आत्मा का स्वरूप श्रीकान्त मिश्र जितेन्द्र कुमार अवधिया	14-16
आध्यात्मिक तत्वों का दार्शनिक अनुशीलन मृगेश कुमार निरत	17-21
धर्मनिरपेक्षता एवं मानवाधिकार की अवधारणा अजय कुमार चौधरी	22-25
वैश्विक समस्याओं के निदान में आध्यात्मिक चेतना की प्रासांगिकता देवदास साकेत	26-32
डॉ. भीमराव अम्बेडकर का सामाजिक एवं राजनीतिक चिन्तन बैद्यनाथ चर्मकार	33-37
संत रविदास एवं संत कबीर के साहित्य में मानवीय मूल्यों की प्रासंगिकता प्रदीप कुमार साकेत	38-41
महाकवि कालिदास के काव्य का दार्शनिक अनुशीलन रामप्रसाद वर्मा	42-44
ग्यारहवीं सदी के उत्तर भारत में पति–पत्नी की स्थिति का ऐतिहासिक अध्ययन प्रकाश चन्द्र बडवाया	45-48
पर्यावरण एवं प्रकृति का सांस्कृतिक अनुशीलन तुलसीराम साकेत	49-53
उद्योगों का मानव जीवन पर आर्थिक प्रभाव का अध्ययन रमेश कुमार साकेत	54-57
मानव और पर्यावरण का भौगोलिक अध्ययन अजेश कुमार चौधरी मिथुन कुमार साकेत	58-61
उद्योग व व्यापार : आर्थिक विकास के आधार (वाणिज्यिक कर के विशेष सन्दर्भ में) अब्दुल हकीम	62-65
आद्योगिक शिक्षा का आर्थिक महत्व रामजस चमार	66-69
पर्यटन का महत्व पन्ना जिले के सन्दर्भ में प्रेमलाल साकेत	70-73
मध्यप्रदेश में पर्यटन उद्योग का आर्थिक अध्ययन विजय कुमार साकेत	74-77
CONTRIBUTORS OF THIS ISSUE	78-79

दर्शन, सृजनात्मकता और मानवीय सम्बन्ध

देशराज सिरसवाल

सारांश

मानवीय-सम्बन्ध सदियों से दर्शन और साहित्य के अध्ययन का मुख्य विषय रहा है. जब भी हम मानवीय सम्बन्धों के विवेचन पर जाते है तब हम इनकी प्रकृति, व्यक्तिगत और सामाजिक सम्बन्धों की प्रमाणिकता के सम्बन्ध में बात करते हैं और हम केवल दार्शनिक विचारों तक ही सीमित नहीं रहते बल्कि हमें मनोविज्ञानिकों, समाजशास्त्रियों, राजनीतिक विचारकों के साथ-साथ साहित्यकारों द्वारा दी गयी व्याख्याओं का भी अध्ययन करना पड़ता है क्यूंकि यह अन्तर्रविषयी अध्ययन का विषय है. जब भी मानवीय सम्बन्धों का दार्शनिक अध्ययन करते हैं तो हमें मानवीय प्रकृति, नैतिक मूल्यों, ज्ञान का क्षेत्र, राजनीतिक-स्वतन्त्रता और अनिवार्यता इत्यादि दर्शन के विभिन्न पहलुओं को भी समझना पड़ता है. प्रेम की प्रकृति (the nature of love), मित्रता (friendship), आत्माभिरुचि एवम अन्य (self-interest and others), दूसरों से सम्बन्ध (relationships with strangers) और सामाजिक-सहभागिता (social participation) इत्यादि इस अध्ययन की विषयवस्तु में सम्मिलित है. इस शोध-पत्र का मुख्य उद्देश्य दर्शन और सृजनात्मकता में सम्बन्ध और मानवीय सम्बन्धों में इनकी उपयोगिता का अध्ययन करना है.

दर्शन का अर्थ और परिभाषा

प्रोफ. दयाकृष्ण ने "ज्ञान मीमांसा" किताब में भारत में दर्शन की स्थिति का वर्णन करते हुए लिखा है , "दर्शन के नाम पर भारत में एक ऐसी अबौद्धिकता का प्रचार किया जाता है जिसे अध्यात्म नाम देकर बुद्धि के अनंत आक्षेपों से बचाया जाता है। बात शब्द की नही है यदि दर्शन का अर्थ वही है जो ये लोग देते हैं; तो हमे उसके लिए कोई नया नाम खोजना पड़ेगा जिसका बुद्धि ही क्षेत्र है और तर्क जिसका प्राण है। शायद 'फिल्स्फा' उसके लिए अधिक उपुक्त शब्द हो।... जहाँ बुद्धि की बात नहीं है वहां दर्शन की बात करना फिजूल है। ध्यान लगाइए , घड्ताल बजाइए , प्राणायाम कीजिये ,योग साधिये, यह सब खुशी से कीजिये ,पर कम से कम इनको दर्शन की संज्ञा मत दीजिये। अलग- अलग चीजों को एक नाम से पुकारने से कोई लाभ नही है ।"[1] दर्शन की कोई निश्चित परिभाषा देना काफी कठिन है लेकिन फिर भी बिना परिभाषा के किसी भी विज्ञान या समाज विज्ञान के अर्थ को नही समझा जा सकता। यहाँ पर हम दर्शन की एक परिभाषा का विश्लेषण करेंगे।

दर्शन की एक सम्भावित परिभाषा यह हो सकती है, "अनवरत और प्रयत्नशील चिंतन की बौद्धिक व्याख्या और उसके मूल्याङ्कन का प्रयास दर्शन कहलाता है।"[2] लेकिन अगर हम इस परिभाषा का विस्श्लेषण करें तो निम्नलिखित कठिनाइयाँ हमें प्रतीत होती हैं. इस परिभाषा के विभिन्न घटकों को देखें :

- *अनवरत* शब्द का अर्थ है, लगातार /परम्परा से। लेकिन यहाँ पर अपवाद है की जब कोई दार्शनिक जब सोचता है, तो यह उम्मीद और भावना रहती हैं की शायद वह कुछ नया प्रस्तुत करे । अत: यह शब्द सार्थक तो है, लेकिन परिभाषा में अनावश्यक है।
- *प्रयत्नशील चिंतन* :

  चिंतन दो प्रकार का है:
  - ✓ स्वाभाविक चिंतन (thinking without efforts) जैसे- मन में ख्यालों का चलना।
  - ✓ प्रयत्नशील चिन्तन (thinking with efforts) - कोशिश द्वारा अर्थात जिसमे क्रमानुसार प्रक्रिया होती है। लेकिन ऐसा चिंतन बौद्धिक ही है। अत: इसको अलग से कहने की आवश्यकता नहीं है। साथ ही केवल दर्शन ही नहीं अन्य विज्ञानों में भी प्रयत्नशील चिन्तन होता है और साथ में व्यावहारिक जीवन में हम हर कम करने के लिए भी इसका इस्तेमाल करते है, लेकिन यह दर्शन नहीं है। जैसे यात्रा से पहले समय सारणी व कार्यक्रम बनाना। चिन्तन के इस भेद को महत्वपूर्ण माना गया है। इसे तार्किक (logical) या प्रत्ययात्मक (conceptual) भेद कहा जाता है।
- किसी भी परिभाषा को दो दोषों से रहित होना चाहिए –
  - ✓ अतिव्याप्ति दोष
  - ✓ अव्याप्तिदोष

परिभाषा उस वस्तु के लक्षणों को प्रकट करती है जिसका हम मुख्यत: वर्णन कर रहे हैं .

- ✓ अतिव्याप्ति दोष उसे कहते हैं, जिसमें लक्षण उस वस्तु के अलावा अन्य में भी रहते हैं जैसे 'गाय' उसे कहते ही, जिसके चार थन होते ही, इसमें अतिव्याप्ति दोष है, क्योंकि भैंस इत्यादि के भी ऐसा होता है।
- ✓ अव्याप्ति दोष उसे कहते है, जिसमें लक्षण अव्याप्त होता है, यानि अपूर्ण होता है, जैसे 'गाय' उसे कहते है, जो सफ़ेद होती है। यह लक्षण भी पर्याप्त नहीं है, क्योंकि गाय काली, भूरी इत्यादि हो सकती है। लेकिन उपरोक्त परिभाषा की कमियों को हमें देखना होगा।

उपरोक्त परिभाषा में प्रयत्नशील चिन्तन अन्य विज्ञानों में भी ही। अत: अतिव्याप्ति दोष है और साथ ही यह बौद्धिक का व्याख्या का ही एक अंग हैं. साथ ही जो लक्षण दो वस्तुओं में भेद को प्रकट कर, उन्हें स्पष्ट करता है वह व्यव्छेद्क धर्म (differentiating characteristic) कहलाता है। वह परिभाषा में होना चाहिए । जैसे वैशेषिक दर्शन में 'कर्म' के लिए 'गति' व्यावर्तक धर्म है, क्योंकि यह उसे अन्यों से भेद दिखलाती है क्योंकि जहाँ भी कर्म है, वहां गति है, जैसे हाथ हिलाना।

दर्शन की परिभाषा के लिए एक और गुण है, जो बहुत आवश्यक है, जिससे वह अन्य बौद्धिक व्याख्याओं या विज्ञानों से उसे अलग करता है, यह है- इन्द्रियानुभाव निरपेक्ष होना यानि इन्द्रियानुभाव से परे होना। लेकिन यहाँ पर प्रश्न उठता है की इन्द्रियानुभाव निरपेक्ष होना गणित और तर्कशास्त्र में भी पाया जाता है, फिर यहाँ अंतर क्या रह जाता है ? इसका सम्भाव्य उत्तर यह दिया जा सकता है की दर्शन मानव-जीवन के विविध पक्षों को लेकर चलता है, जबकि गणित इससे बहुत भिन्न होता है। अग्रवर्ती गणित (advanced mathematics) केवल अवधारणाओं से भरा है, अनुभूति का कोई स्थान नहीं । अत: दर्शन की परिभाषा निम्न दी जा सकती है:

- ✓ "मानव-जीवन के विविध पक्षों का बौद्धिक - अवधारणात्मक चिन्तन या ऐसे चिन्तन का आलोचनात्मक मूल्यांकन दर्शन है।" (Pure rational-conceptual thought regarding different aspects of human life or a critical thought over such kind of thoughts may be called as philosophy.)

दर्शन की अन्य विशेषता यह है की यह आत्मालोचक (self- critical) है। कहने का भाव यही है की दर्शन ही एक मात्र ऐसा विषय है, जो अपने स्वरूप के बारे में सोचता है। जैसे : इतिहास क्या है?, विज्ञानं क्या है?, गणित क्या है?, विधि क्या है? दर्शन ही एक मात्र विषय है, जो इसके बारे चिन्तन करता है, यह सभी के स्वरूप की अवधारणाओं का अध्ययन करता है। अन्य विषय ऐसा नहीं करते। परन्तु आस्तित्ववादी दार्शनिक इससे भिन्न विचार रखते है, वे कहते है कि बुद्धि या तर्क से जब हम मानव जीवन से सम्बन्धित जैसे प्यार, नैतिकता, धर्म इत्यादि अवधारणाओं को समझने की कोशिश करते हैं तो उनकी आत्मा का हनन कर देते हैं. यह वास्तव में आस्तित्व नहीं रखते, लेकिन इनको समझने के लिए हमें इन्हें जीना होगा। यदि ऐसा ही होता तो साहित्य और दर्शन में समानता है और फिर इन दोनों में अंतर क्या रह जाता है ? यह समझ नहीं आता। उपरोक्त विचार अल्बर्ट कामू, काफ़्का,सार्त्र इत्यादि आस्तित्वादी दार्शनिकों के हैं।

<u>दर्शन पर वर्तमान आक्षेप:</u>

दर्शन और दर्शनशास्त्र की उपयोगिता पर बहस का इतिहास बहुत पुराना है, विभिन्न समय में दार्शनिकों ने तत्कालीन परस्थितियों के अनुसार दर्शन का विश्लेषण और मुल्यांकन किया है और परिणामस्वरूप अलग अलग दर्शन की शाखाओं और नवीन समस्याओं का उद्भव हुआ है. लेकिन पिछले साल एक भौतिकी के वैज्ञानिक ने ऐसी टिप्पणी की है जिस पर दुनिया भर में हंगामा मचना तय है। एक कांफ्रेंस में महान वैज्ञानिक स्टीफन हॉकिंग ने कहा कि 'दर्शनशास्त्र मृत हो चुका है।' वह सोचते हैं कि दर्शन खत्म हो चुका है, क्योंकि इस क्षेत्र में नई बातें नहीं आ रही हैं। हॉकिंग मानते हैं कि दर्शन (फिलॉसफी) वह युवा है, जो कॉकटेल पार्टी में तब दिखता है, जब सारे अतिथि जा चुके होते हैं। सवाल उठता है कि सबसे बुद्धिमान जीवित इंसानों में से एक हॉकिंग ने यह आपत्तिजनक टिप्पणी क्यों

की? जाहिर तौर पर इसका कारण है: 'दर्शनशास्त्री।' हॉकिंग ने कहा, 'इनका आधुनिक विकास से कोई वास्ता नहीं, खास तौर से भौतिकी से।' उनके अनुसार,सांसारिक सच्चाइयों की जानकारी भौतिकशास्त्री के पास है।

हॉकिंग द्वारा शुरू की गई यह बहस न सिर्फ गलत बुनियाद पर टिकी है, बल्कि गलत दिशा में भी बढ़ गई है। जाहिर है वे एक स्थापित भौतिकशास्त्री हैं और उनकी कही गई एक-एक बात पर विचार किया जाता है। वैसे जिस गंभीरता से उन्होंने अब तक काम किया है, उनके इस बयान को बगैर सोचे-समझे दिया गया बयान नहीं माना जा सकता है। यह समझने की जरूरत है कि आज भी विश्वविद्यालयों में फिलॉसफी की पढ़ाई होती है और दुनिया के साथ मानव अस्तित्व पर दर्शनशास्त्री विभिन्न दृष्टिकोणों से किताबें लिख रहे हैं। इसलिए यह सवाल ज्यादा सटीक है कि कौन-से दर्शनशास्त्र मृत हो चुके हैं? इस विषय से जुड़े सवाल नए नहीं हैं। हॉकिंग की यह व्याख्या काफी हद तक सही है। उन्हीं की बात का समर्थन दुनिया भर के और वैज्ञानिकों ने भी किया है। लेकिन सवाल उठता है की दर्शन के बारे इस तरह की बातें वर्तमान में क्यों उठ रही है ? इसका एकमात्र जवाब यह हो सकता है की दार्शनिकों को अपने चिन्तन को वर्तमान सामाजिक और राजनितिक समस्याओं पर लाना होगा जोकि सीधे मानव जीवन से जुडी हैं और लगातार उसे प्रभावित करती रहती है. भारत में दार्शनिकों को एक विशेष एक्टिविज्म की जरूरत है और इसके लिए उन्हें संकल्प लेना होगा और दर्शन की जीवन्तता को दिखाना होगा.[3] इस तरह हम कह सकते हैं की अगर दार्शनिक अपनी भूमिका को नहीं पहचान पाते तो दर्शन पर इस तरह के आक्षेप सम्भाव्य हैं.

<u>सर्जनात्मकता क्या है?</u>

सर्जनात्मकता अथवा रचनात्मकता किसी वस्तु, विचार, कला, साहित्य से संबद्ध किसी समस्या का समाधान निकालने आदि के क्षेत्र में कुछ नया रचने, आविष्कृत करने या पुनर्सृजित करने की प्रक्रिया है। यह एक मानसिक संक्रिया है जो भौतिक परिवर्तनों को जन्म देती है। सृजनात्मकता के संदर्भ में वैयक्तिक क्षमता और प्रशिक्षण का आनुपातिक संबन्ध है। राधिका मेनन के अनुसार "सृजनशीलता का कोई एक आधिकारिक परिप्रेक्ष्य या परिभाषा नहीं है और दिलचस्प बात तो यह है कि सृजनशीलता के लिहाज से मनोविज्ञान द्वारा अध्ययन की गई दूसरी बातों के विपरीत खुद सृजन-शीलता को मापने को कोई सर्व-स्वीकृति तकनीक भी नहीं है। संक्षिप्त ब्रिटेनिका विश्वकोष ने सृजनात्मकता की परिभाषा देते हुए उसे एक नया विचार या सोच, कल्पनाशील हुनर के जरिए कोई नहीं चीज निर्मित करने की क्षमता, किसी समस्या का कोई नया हल, नया तरीका या युक्ति या कोई नई कलात्मक वस्तु या रूप बताया है। विश्लेषण, क्रमिक, विकास व सुधारों और नई खोजों के मानकों पर आगे बढने को भी सृजनशीलता समझा जाता है। इस परिभाषा को लेने पर अंतर्दृष्टि किसी खास क्षेत्र की बपौती नहीं रह जाती।"[4]

सृजनात्मकता के अगर शाब्दिक अर्थ की बात किया जाये तो "create"का शाब्दिक अर्थ है – सृजन करना, उत्पन्न करना आदि. "Creativity" से अर्थ है, विचारों और वस्तुओं में नये सबंध देखना. अब

प्रश्न उठता है की क्या नवीनता का होना सृजनात्मकता के लिए आवश्यक है? कुछ विद्वानों ने सृजनात्मकता की परिभाषायें प्रस्तुत की हैं जिनमे नवीनता को सृजनात्मकता का मुख्य बिंदु माना गया है :

- ड्रेव्ड्हल (Drevdhal) के अनुसार, " सृजनात्मकता व्यक्ति की वह योग्यता है जिसके द्वारा वह कोई नवीन रचना करता है अथवा नवीन विचार प्रस्तुत करता है." (Creativity is the ability of individual by which he creates something new and presents novel ideas.) According to Drevdahl, "Creativity is the capacity of a person to produce compositions or ideas which are essentially new."
- स्किनर (Skinner) के अनुसार , "सृजनात्मकता से अर्थ है कि व्=यक्ति की भविष्यवाणियां नई, मौलिक तथा असाधारण होती हैं. सृजनशील व्यक्ति वह है जो नये क्षेत्रों की खोज करता है, नये अवलोकन करता है, नई भविष्यवानियाँ करता है तथा नए निष्कर्ष निकालता हैं". (Creativity thinking means that the predictions for the individual are new, original and unusual. The creative thinker is one who explores new areas and makes new observations, new predictions, new in references.) According to Skinner, "Creative thinker is one who explores new areas, makes new observations, predictions and inferences."
- स्टेगनर एवम् कावोस्की (Stagner and Karwoski) के अनुसार, " किसी नई वस्तु का पूर्ण या आशिंक उत्पादन सृजनात्मकता है." (Creativity implies the production of the totality or partiality novel identity.) According to Stagner, "Creativity implies the production of a totally or partially novel identity.
- आइजैक (Eysneck) के अनुसार, " सृजनात्मकता वह योग्यता है जिसके द्वारा नए संबंधों का ज्ञान होता है तथा इसकी उत्पत्ति के परम्परागत प्रतिमानों से हटकर असाधारण विचार उत्पन्न होते हैं." (Creativity is the ability to see new relationship, to produce unusual ideas and to deviate from traditional patterns of thinking.) [5]

उपरोक्त परिभाषाओं के आधारपर हम सृजनात्मकता की विशेषताओं का निम्नलिखित रूप से उल्लेख कर सकते हैं :

- सृजनात्मकता सार्वभौमिक होती है अथवा सृजनात्मकता सभी प्राणियों में होती है, किसी में अधिक और किसी में कम.
- सृजनात्मक योग्यता प्रशिक्षण तथा शिक्षा द्वारा विकसित की जा सकती है .

- सृजनात्मकता अभिव्यक्ति द्वारा किसी नई वस्तु को उत्पन्न किया जाता है, परन्तु यह जरूरी नहीं कि वह वस्तु पूर्णरूप से नई हो.
- सृजनात्मकता प्रक्रम से जो उत्पादन होता है वह मौलिक होता है.
- सृजनात्मकता और बुद्धि में अधिक सम्बन्ध नहीं है .
- गिल्फोर्ड ने अपने अनुसंधानों के आधार और यह निष्कर्ष निकला की सृजनात्मक चिन्तन में निम्नलिखित योग्यताएं शामिल होती है:
    a) समस्याओं के प्रति संवेदनशीलता (Sensitivity of Problems)
    b) लचीलापन (Flexibility)
    c) विस्तण (Elaboration)
    d) प्रवाह(Fluency)
    e) पुन: परिभाषित करना (Re-definition)
    f) अमूर्त एवम् संक्षेपण करने की क्षमता (Abstracting ability)
    g) व्यवस्थित एवम वर्गीकरण करने की क्षमता (Ability to arrange)
    h) संगठित एवम् सुगठित करने की क्षमता (Ability to coherence and organization)
    i) संश्लिष्ठ एवम् सुबद्ध करने की क्षमता (Ability to synthesize and closure)

अत: हम यह कह सकते हैं कि सृजनशीलता वह मानसिक प्रक्रिया है जिसके द्वारा मनुष्य अपने वातावरण को इस प्रकार बल देना चाहता है कि उसमें वह नए विचार नमूने अथवा सम्बन्ध उत्पन्न कर सके. सृजनशीलता मौलिक कार्य करने की क्षमता है या जिससे हम पुराने अनुभवों को पुनः निर्मित करके नई रचना करने की उपयोगी योग्यता कह सकते हैं.[6]

<u>दर्शन, सृजनात्मकता और मानवीय सम्बन्ध</u>

अभी हमने दर्शन के स्वरूप और सृजनात्मकता के बारे पढ़ा. दर्शन और सृजनात्मकता में क्या सम्बन्ध है? दर्शन सृजनात्मकता को विषयवस्तु प्रदान करता है अथवा दृष्टिकोण? मानवीय सम्बन्ध किसे कहते हैं? बेहतर और बदतर मानवीय सम्बन्ध सृजनात्मकता को किस प्रकार प्रभावित करते हैं? दर्शन का इन सबमें क्या योगदान है? ये कुछ प्रश्न है जिनका उत्तर हमें खोजना होगा तभी हमारी खोज किसी सार्थकता की तरफ अग्रसर होगी. प्रो. देवराज के अनुसार, "मनुष्य की सृजनात्मक प्रक्रिया का दर्शन हमें प्राकृतिक व्यवस्था को बदलने में तथा उसकी सौन्दर्यात्मक अभिरूचि में होता है। मनुष्य बाह्य घटनाओं के प्रति अपनी प्रतिक्रिया विभिन्न ढंगों से व्यक्त करता है।" डॉ. कलाम के अनुसार, "सर्वोत्तम शिक्षा वह होती है जब शिक्षक अपने छात्र को सृजनात्मक अध्ययन की आदत डाल दे, जिससे जीवनपर्यंत ज्ञान की पिपासा जगी रहे। शिक्षक न केवल अपने शिक्षण से छात्रों पर प्रभाव डालता है

अपितु निस्वार्थ ज्ञान के प्रतिपादन जैसे मानवीय मूल्यों से भी उनको प्रभावित करता है।" इस तरह के काफी विचार पढने को मिलते है और यह सब हमारे इस अध्ययन को सार्थक बनता है.

जब कोई व्यक्ति कला की बात करता है तो भावनाएं, अभिव्यक्ति और सृजनात्मकता इत्यादि शब्दों से हमारा सामना होता है. सृजनात्मक शब्द का प्रयोग हर कला, साहित्य और ज्ञान की हर शाखा में करते हैं लेकिन सिर्फ कला से जोड़ कर इसको देखना संकुचित दृष्टिकोण होता है. दर्शन के क्षेत्र में अगर हम देखें तो हमें सृजनात्मकता के अध्ययन बारे ज्यादा विस्तृत चर्चा नहीं मिलती लेकिन हम महान दार्शनिकों के लेखन में इसका वर्णन आसानी से देख सकते हैं. प्लेटो के अनुसार प्रेरणा एक तरह का पागलपन ही है तथा कान्त सृजनात्मकता को कल्पना से जोड़ते हैं. दोनों ही दार्शनिकों ने स्वच्छन्दतावाद को प्रभावित किया और सृजनात्मकता की महत्वपूर्ण अवधारणाएँ हैं. यह आश्चर्य का विषय है की दर्शन के क्षेत्र में इस पर 1950-2000 के बीचमें बहुत कम काम हुआ है. कला दर्शन में भी अगर हम देखें तो व्याख्या, कला की परिभाषा,सौन्दर्य की अवधारणा इत्यादि पर ज्यादा काम हुआ है बजाये सृजनात्मकता के. विषय की गहनता और उपरोक्त उठाये गये महत्वपूर्ण प्रश्नों के कर्ण दर्शन में यह भी मुख्य विषय होना चाहिए. मनोविज्ञान में जरूर इस विषय पर काफी काम हुआ है किन्तु यह मात्र सौंदर्यशास्त्र का विषय न रहकर विज्ञान, कला, तकनीकी, संगठनात्मक जीवन, और रोजमर्रा की गतिविधियों में भी पाया जाता है. जब भी हम दर्शन में सृजनात्मकता की बात करते हैं तो केवल कला दर्शन का अलावा मनोदर्शन, विज्ञान और ज्ञानमीमांसा जैसे अन्य विषयों की तरफ भी हमें जाना पड़ेगा.

बेर्यस गौट (Berys Gaut) अपने लेख "द फिलोसोफी और क्रिएटिविटी"[7] में सृजनात्मकता को दर्शन के सन्दर्भ में अध्ययन करते समय सृजनात्मकता और कल्पना में क्या सम्बन्ध है, क्या सृजनात्मक प्रक्रिया बौद्धिक होती है, ज्ञान का सृजनात्मकता से क्या सम्बन्ध है, क्या सृजनात्मकता की व्याख्या की जा सकती है इत्यादि प्रश्नों को उठाते हैं. इसके साथ ही वह सृजनात्मक दर्शन के निम्नलिखित महत्वपूर्ण विषयों पर भी चर्चा करते हैं :

1. पहला प्रश्न है की क्या सृजनात्मकता एक सद्गुण है? आजकल ज्ञान की हर शाखा में सद्गुणों की चर्चा हो रही है तो तब यह प्रश्न अधिक महत्वपूर्ण हो जाता है की क्या सृजनात्मकता एक सद्गुण है ?
2. दूसरा महत्वपूर्ण प्रश्न यह है की सृजनात्मकता और बौद्धिकता एक दुसरे को कैसे प्रभावित करती है?
3. तीसरा महत्वपूर्ण प्रश्न है की क्या सृजनात्मकता परम्परा से विपरीत होती है? कुछ दार्शनिक ऐसा मानते हैं की सृजनात्मकता में कुछ तत्व परम्परा का भी होता है. अगर ऐसा ही है तो परम्परा के लिए समाज की जरूरत होती है तो सृजनात्मकता भी अनिवार्यतः सामाजिक हो जाती है. आजकल सृजनात्मकता सम्बन्धी मनोविज्ञान की सामाजिक सांस्कृतिक सिद्धांत में हमें इस तरह के दार्शनिक पक्ष देखने को मिलते हैं तो इस तरह यह सिद्धांत भी दार्शनिकों के अध्ययन का विषय होना चाहिए.

4. चौथी महत्वपूर्ण बात यह है की डार्विन के सृजनात्मकता के सिद्धांत पर भी दार्शनिकों को अपना ध्यान लगाना चाहिए. क्यूंकि इस पर ज्यादा काम मनोविज्ञानिकों ने ही सृजनात्मकता के क्षेत्र में किया है जबकि दार्शनिकों के के लिए भी यह बहुत मूल्यवान है.[8]

उपरोक्त के अलावा गौट कुछ महत्वपूर्ण दार्शनिक प्रश्न भी उठाते हैं की क्या सृजनात्मकता की व्याख्या की जा सकती है ? बहुत से दार्शनिक इसकी प्राकृतिक व्याख्या देने से परहेज नहीं करते. जैसा की प्लेटो के अनुसार सृजनात्मकता हमारे अंदर रहने वाले देवताओं का काम है. कान्त के अनुसार व्याख्याएं निर्धारित नियमों के आधार पर दी जा सकती हैं और सुंदर कला के इस तरह के कोई निर्धारक नियम नहीं है क्योंकि यह बुद्धि (genius) का काम है जबकि बुद्धि स्वयम भी यह नहीं जानती की ये विचार कहाँ से आते हैं. इस तरह वह वर्तमान समय की अवधारणों के बात करते हुए कहते हैं की सृजनात्मकता के कम्प्यूटेशनल अवधारणों से भी अद्ययन करने की आवश्यकता है. दार्शनिक इस विषय को भी उठा सकते है की क्या विभिन्न ज्ञान की शाखाओं में सृजनात्मकता एक जैसे काम करती है या अलग अलग हो सकती है? वह आगे कहते हैं की दार्शनिकों के लिए यह प्रश्न भी महत्वपूर्ण बन जाता है की क्या सृजनात्मकता कला में कलात्मक मूल्य रखती है? उपरोक्त विषयों में वह हमें यही दिखाना चाहते हैं की सृजनात्मकता के अद्ययन में दार्शनिक भी अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं क्योंकि सृजनात्मकता से सम्बन्धी जो प्रश्न मनोविज्ञान से जुड़े है वह वास्तव में दर्शन के क्षेत्र में भी आते हैं इसलिए इनका दार्शनिक अद्ययन महत्वपूर्ण हो जाता है .[9]

अब हमारे लिए प्रश्न उठता है की मानवीय सम्बन्धों का दर्शन और सृजनात्मकता से क्या सम्बन्ध है. इस प्रश्न का सीधा उत्तर है की दर्शन मानवीय सम्बधों को परिभाषा देता है और सृजनात्मकता उसमें प्राण फूंकती है. किसी भी व्यक्ति की सृजनशीलता का जन्म मानव मूल्यों के प्रति संवेदनशीलता के अनुसार ही होता है और यही सृजनशीलता दर्शन की सीमा में आती है. सृजनात्मकता के लिए सकारात्मक प्रेरणा की जरूरत होती है अगर हमे सही प्रेरणा और सहयोग मिलता है तो हम अपनी सृजनशीलता को बड़ा सकते हैं अन्यथा नकारात्मक सम्बन्ध हमारे स्वाभिमान को ठेस पहुंचाते हैं और इसी कारण हमारे द्वारा किये गये कार्यों में वह गुणवत्ता नहीं मिलती. अत: हम यह मान सकते हैं व्यक्ति के सृजनशील होने में उसके सम्बन्धों और सामाजिकता की बहुत बड़ी भूमिका है. समाजिकता मानवीय सम्बन्धों पर आधारित होती है इस लिए दर्शन, सृजनशीलता और मानवीय सम्बन्धों में अटूट सम्बन्ध है.

सृजनशीलता और सामाजिकता में क्या सम्बन्ध इस पर राधिका मेनन जी के यह विचार बहुत महत्वपूर्ण हो जाते हैं, "जिस तरह सृजनशीलता परिभाषित की जाती है, जिस तरह वह उभरती है और जिन क्षेत्रों में उभरती है, यह सब सामाजिक तौर पर तय होता है। सृजनात्मकता भी सामाजिक निर्मित है। किस तरह के सृजनशील विचार किन क्षेत्रों में किसे मिलेंगे, यह उनकी सामाजिक भूमिकाएं तय करती हैं। अगर स्त्री या पुरुष के काम कुछ सीमित दायरों में बंद किए जाएंगे तो हम उनसे दूसरे क्षेत्रों में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने, वहां पैदा होने वाली समस्याओं से निपटने और उनमें सृजनात्मक भरने की अपेक्षा कैसे कर सकते हैं?

आर्थिक व्यवस्थाओं का चरित्र, सामाजिक चलन और राजनैतिक सत्ता किस किस्म की है, इससे भी सृजनशीलता का मूल्य तय होता है।...सृजनशीलता समाज निरपक्ष नहीं है, बल्कि जिस समय में हम

रहते हैं, वह कैसा है, वहां किस किस्म के सत्ता विभाजन मौजूद हैं, सफलता कैसे परिभाषित होती है, किसे मूल्यवान कहा जाता है, ऐसी बातें उस पर गहरा असर डालती हैं और वह किसी असाधारण मस्तिष्क की हद में कैद नहीं रहती, बल्कि वह अनेक आयामों वाली है और खुद को विभिन्न तरीकों से अभिव्यक्त करती है, जो इस पर निर्भर हैं कि कोई किस किस्म के कामों से जुडा है इसलिए शिक्षाकर्मियों के रूप में सृजनशीलता की संकीर्ण परिभाषाएं हमारी मदद नहीं करती। उनका सामाजिक संदर्भ अपरिहार्य महत्व रखती हैं... हमें यह ध्यान देने की जरूरत है कि सृजनशीलता के अनेक स्वरूप हैं, वह अनेक क्षेत्रों में अभिव्यक्त होती है और वह किसी में भी अभिव्यक्त हो सकती है, बशर्ते उन्हें गहराई के साथ उससे रूबरू होने, दिलचस्पी के विभिन्न क्षेत्रों को खोजने के अवसर सभी को उपलब्ध हों। सृजनशीलता के सामाजिक संदर्भ और क्षमताओं पर ठप्पा लगाने या भावी क्षमताओं को विकसित व प्रशिक्षित किए जाने के पहले उनको वर्गीकृत करने से बचने की बात पर ध्यान देना भी महत्वपूर्ण है। मुझे लगता है कि हमारी शिक्षा व्यवस्था जो सामाजिक विभेदों को दिनोंदिन ठोस करती जा रही है और गारंटी कर रही है कि गरीब छात्रों को दरिद्र सुविधाओं, दरिद्र आधारभूत ढांचों और सीखने के दरिद्र अवसरों वाले दरिद्र स्कूल नसीब हों, जबकि अभिजनों शक्तिशाली लोगों, अमीरों और उसे पाने की समर्थ रखने वालों को ऐसे भव्य स्कूल उपलब्ध हों जो बच्चों की प्रतिभा को बहुविध क्षेत्रों की ओर विकसित करें और बच्चों को सर्वोत्तम शिक्षाशास्त्रीय पद्धतियों से रूबरू कराएं।[10]

सार रूप में हम कह सकते हैं की दर्शन को परिभाषित करते समय सुझाये गये बिन्दुओं पर ध्यान देना चाहिए. दर्शन और सृजनात्मकता में बहुत महत्वपूर्ण सम्बन्ध है. दार्शनिकों को चाहिए की इसके विविध पक्षों का अध्ययन करें और ज्ञान की दूसरी शाखाओं द्वारा दिए गये विचारों और सिद्धांतों को ध्यान में रखते हुए अपने विचार दे. इस सन्दर्भ में गौट का लेख बहुत महत्वपूर्ण कड़ी बन जाता है. सृजनात्मकता सामाजिकता से जुड़ा हुआ है और मानवीय सम्बन्ध इसमें महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं . अत: तीनों का अध्ययन एक महत्वपूर्ण विषय है.

सन्दर्भ एवम टिप्पणियाँ:

1. प्रो. दया कृष्ण, ज्ञान मीमांसा, अध्याय प्रथम,राजस्थान हिंदी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर.
2. प्रस्तुत परिभाषा विश्लेषण मेरे अध्यापक स्व. प्रो. नरेंदर नाथ गुप्ता जी और मेरे आपसी बातचीत का परिणाम है.
3. क्या 'दर्शन' मर गया है?" नया इंडिया , http://www.nayaindia.com/buniyad/kya-darshan-mar-gaya-hain-77955.html
4. राधिका मेनन, "सामाजिक संदर्भ में सृजनात्मकता", देशबन्धु, मार्च 2011 http://www.deshbandhu.co.in/newsdetail/5259/9/0#.VL51Z3I5CP813.
5. सृजनात्मकता की यह परिभाषाएं इस लेख से ली गयी है: सेंथिल कुमार द्वारा लिखित, "वाय शुड इंडिविजुअल डिफरेंसेस बी डेवलप्ड?

http://www.publishyourarticles.net/knowledge-hub/education/why-should-individual-differences-be-developed.html.

6. प्रोमिला ओबरॉय, अधिगमकर्ता, अधिगम एवम् ज्ञान का मनोविज्ञान, लक्ष्मी बुक डिपो, भिवानी (हरियाणा) 2014, पृष्ठ 294-295.
7. बेर्यस गौट (Berys Gaut) अपने लेख "दी फिलोसोफी और क्रिएटिविटी", फिलोसोफी कम्पास, 5/12 (2010): 1034–1046, 10.1111/j.1747-9991.2010.00351.x
8. वही.
9. वही.
10. राधिका मेनन, "सामाजिक संदर्भ में सृजनात्मकता", देशबन्धु, मार्च 2011 http://www.deshbandhu.co.in/newsdetail/5259/9/0#.VL51Z3I5CP813.